



ह  
क

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीहनुमते  
नमः ॥ ॐ अस्य श्रीपंचमखीहनुमत्स  
म् ॥ श्रीरामचंद्रकृषिः ॥ हनुमान ॥ पंच  
मखीदेवता ॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ हनुमानि  
तिशक्तिः ॥ अंजनीसुत इति कौलकं ॥  
आत्मनो ॥ श्रीरामचंद्र ॥ हनुमत्प्रसाद ॥

सिद्धये॥ पादेविनियोगः॥ अथ न्यासः॥  
ॐ शंभुजीसुताय॥ श्रेष्ठेष्टाभ्यां नमः॥ ॐ  
रुद्रमूर्तेये तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ वायु  
पुत्राय मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ शंभुजीग  
र्भाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ पंचसुत  
वीर्यमनेकरत्नकरेष्टाभ्यां नमः॥



天

[illegible]

हा॥ इति हृदयादिन्यासः॥ इति दिग्बं  
धः॥ अथ ध्याने॥ श्रीगमचेद्रहताय  
श्रेजनीसताय॥ वायुपुत्राय॥ महा  
बलाय॥ सीतान्नः॥ त्रिभुवनविवा  
णाय॥ लंकादहनाय॥ महाबलप्र  
दंशाय॥ फालगुणसत्वाय॥ कोला



ह  
क ३

हल सकल॥ ब्रह्मांडविषयाय॥ स  
प्रसमदलं चिनाय॥ पिंगल नयना  
य॥ अमिन्विक्रमाय॥ सूर्यविंदा महा  
प्रवसाय॥ हृदिनिगलंकृताय॥ संजी  
वनीसालंकृताय॥ अंगदलक्षणा  
य॥ महाकपिसैन्यप्राणाप्रदाय॥ निर्वा

हकाय॥ दशाकेदविधसनाय॥ रामे  
ष्टाय॥ महाफाल्गुनसत्वाय॥ मीना  
समेत॥ रामचंद्रवरप्रसादकाय॥ फल  
प्रयोगाय॥ गम्य॥ पंचमुखिहनुमत्के  
वचं ध्यात्वा॥ ओं हरि मर्कटमर्कटाय॥  
बंबंबंबंबंबं फट॥ ओं हरि मर्कटमर्कटा



हे  
के

य॥ फेफे फेफे फेफे फट स्वाहा॥ ओं हरि म  
र्कट मर्कटाय॥ जेजं जेजं जेजं फट स्वाहा॥  
ओं हरि मर्कट मर्कटाय॥ विवि विवि वि  
माराणा य स्वाहा॥ ओं हरि मर्कट मर्कटाय  
य॥ फेफे फेफे फेफे फट स्वाहा॥ ओं हरि मर्क  
ट मर्कटाय॥ लं लं लं लं लं॥ आकषं सवि

संपत्कराय॥ फट स्वाहा॥ ओं हरि मर्कट  
मर्कटाय॥ वं वं वं वं वं॥ स्वस्मना य स्वा  
हा॥ ओं हरि मर्कट मर्कट मर्कटाय॥ ओं  
ओं ओं ओं॥ आस्यर्क॥ सकल संपत्तिक  
राय स्वाहा॥ ओं हरि मर्कट मर्कटाय॥ ओं  
ओं ओं ओं॥ अस्मभवि संपत्कराय स्वाहा॥



ह  
क

ॐ ऊर्ध्वसुखिहयग्रीवाय ॥ रूं रूं रूं रूं  
रूं ॥ रुद्रमूर्तये ॥ सकलजननि ॥ वीर  
कारणाय ॥ पंचसुखिहनुमते ये वा  
हा ॥ ॐ उच्चाटनाय ॥ हूं हूं हूं हूं हूं ॥  
कलमूर्तये ॥ पंचसुखीहनुमते ॥ पर  
मंत्रपरतंत्र ॥ उच्चाटनाय स्वाहा ॥ ॐ

ॐ के विगे ये उं ॥ वं वं नं के मे ॥ हं वं  
हं हं हं ॥ तं थं हं थं नं ॥ पं फं वं भं मे ॥ ये रं  
लं वं ॥ शां भं सहं ॥ लं दं तं स्वाहा ॥ इति  
॥ हं वं ॥ पूवं कं पि सुखी ॥ पंचसुखि  
हनुमान ॥ हं हं हं हं हं ॥ सकलशत्रुसं  
हाराय स्वाहा ॥ ॐ दक्षिणसुखी ॥ पंच



हे  
कै

सुखीरुनुमते॥ कुरुतुलसिंहाय स्वा  
हा॥ ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं॥ सकलभूतपते  
दमनाय स्वाहा॥ ओं पश्चिम सुखीरी  
रुग रुद्राय॥ पंचसुखीरुनुमते॥ मं  
मं मं॥ सकलविचरराय स्वाहा॥ ओं  
उन्नरसुखी॥ आदिवराहाय॥ लंलंलं

लंलं॥ नृसिंहाय॥ नीलकंठमूर्तये॥ पं  
चसुखीरुनुमान॥ अंजनीसुताय॥  
ॐ सुखीवीररुनुमते नमः॥ अंजनी  
सुताय॥ वायुपुत्राय॥ महाबलाय॥ सी  
ताशोकः॥ त्रिनिवाशाय॥ लक्ष्म  
णप्रणारदाय॥ दशग्रीवराजाय॥



ह  
क

श्रीरामचंद्रपादसेवकाय॥महावीर्या  
य॥प्रथमब्रह्माज्ञनायकाय॥पंचम  
वी॥वीरहन्तायनमः॥सर्वभूतक्षे  
पिशाचब्रह्मराक्षस॥प्राकिनीनाशके  
नी॥श्रुतरिक्ष॥ग्रहपरयंत्र॥परतंत्र॥  
आटनायस्वाहा॥सकलजन॥निर्व

ह॥कारणाय॥पंचमुखी॥वीरहनुमा  
न॥श्रीरामचंद्रवरप्रसादकाय॥जंजं  
नं॥जंफटस्वाहा॥कवचेंपदेहात॥  
हाकवचेंपदेन्नर॥सर्वशत्रुनिवा  
ण॥हिंवारंपदेनित्यं॥सर्वप्राणिक  
शुभं॥विवारंतपदेनित्यं॥प्रथमं॥



५८

विवर्धने॥ चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्वरोग  
निवारणं॥ पंचवारं पठेन्नित्यं पंचमः।  
वीरपणिकरं॥ षष्ठवारं पठेन्नित्यं॥  
वन्देववपुणिकरं॥ सप्तवारं पठेन्नित्यं॥  
वसोभाषदायकं॥ अष्टवारं पठेन्नित्यं॥  
शुक्लामार्थसिद्धिदं॥ नववारं पठेन्नित्यं॥

राज्यभोगसमालभेत्॥ दशवारं पठे  
न्नित्यं॥ त्रैलोक्यज्ञानदण्डं॥ एकाद  
शवारं पठेन्नित्यं॥ सर्वसिद्धिर्भवेन्नरः॥  
चक्षुस्मरणेनैव॥ महाबलसम्पन्नि  
ति श्रीसुदर्शनमहितायाः श्री  
चंद्रमौलामनोहरायाः॥ पंचमुखी



ॐ  
कर्म

वीर॥ हनुमत्कवचं॥ संपूर्णम्॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हो ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमस्तु  
न्यगुरुं श्रीमज्जालाभायाख्य  
शशिस्त्रिणाम् ॥ संगटस्थने वक्रहडा  
चक्रभाषाविभूषितम् ॥ सप्तवार  
श्रौरनवग्रह ॥ रविः ॥ सोमः ॥ भौमः

हो शक्रः ॥ मूले च पूर्वाषाढा उत्तरा  
षादेयत्रुः ॥ उत्तरायास्त्रयः पादाः स्र  
वणथनिष्ठार्थमकरः ॥ धनिष्ठार्थ  
शतभिषा पूर्वाभाद्रपदपादत्रये  
कुंभः ॥ पूर्वाभाद्रपदपादमेकसु



हो  
१

नरारेव न्यान्तमीनः ॥ १ ॥ दशाश्रौ  
रविदिशा ॥ पूर्व ॥ दक्षिण ॥ पश्चिम  
उत्तर ॥ आग्नेय ॥ नैऋत्य ॥ वायव्य ॥  
पेशान्य ॥ ८ ॥ अथ दिक्पूल ॥ शनौ  
चंद्रेत्यजेत्पूर्वादिदिशं

ॐ श्रीरत्न

ॐ श्रीदेव्यै शारदायै नमः ॥ ॐ मूला  
धारै वारिजपत्रेषु चतुर्षु वं पूं षं सं  
वर्णविशालं सुविशालम् रक्तह  
यं श्रीगणनाथं भगवन्तं दत्तात्रेयं  
श्रीगुरुभूतिं प्रणतोस्मि १



श्रीः

नामिस्थाने दशदल यत्रै डफ व  
लं लक्ष्मीकांतं गरुडावतु हं नंदी  
रमू दीप्ताश्रमं चिद्धननुयं भग  
वंतं दत्तात्रेयं सद्गुरु मुनिं प्रणतो  
स्मि ॥ ३ ॥ हृत्पत्रं स्थे वादशप

त्रैकठवर्ले शुक्लद्रव्यं हंसविशेषं शि  
 वमीशम् सगस्थित्यन्तं कुर्वन् ध्वनि  
 कृपं दत्तात्रेयं सद्गुरुमूर्तिं प्रणतोस्मि ॥  
 ४ ॥ कण्ठस्थाने विष्णुचक्रे जल  
 जाने चन्द्राकारे षोडशायत्रे स्वरव

लं मायाधीशं हंसस्वरूपं यदि  
 कृपं दत्तात्रेयं सद्गुरुमूर्तिं प्रणतो  
 स्मि ॥ ५ ॥ आन्ताचक्रे भूमध्य  
 स्थाने द्विदलाब्जे हंसवर्णं ज्ञान  
 मयं तं निरुपाधम् विबुधैर्





CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri



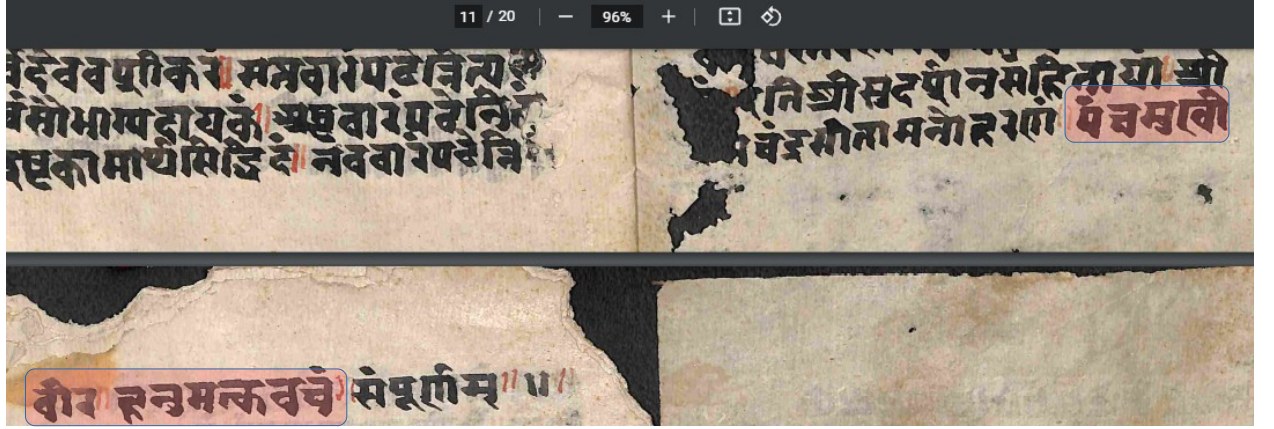
This manuscript Includes

Panchamukhi Veera Hanumat Kavacham

Shri Dattatreya Ashtachakra Beeja Stotram by Shri Shankaracharya

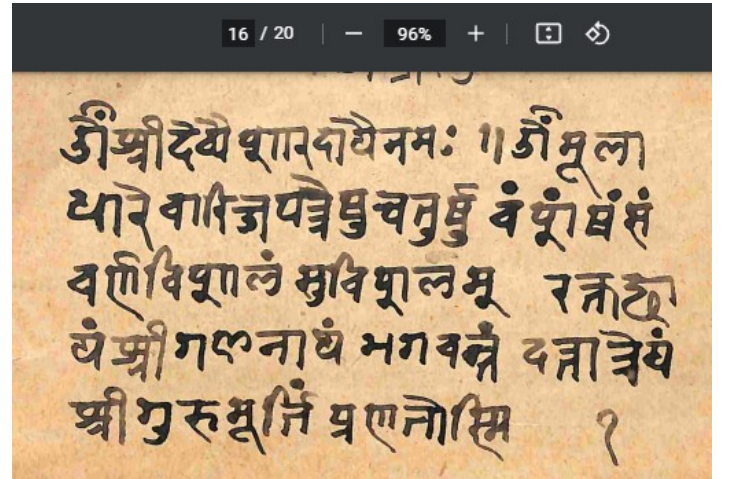


Page 1-11 : Panchamukhi Veera Hanumat Kavacham



Page 16-18 : Shri Dattatreya Ashtachakra Beeja Stotram by Shri Shankaracharya

मूलाधारे वारिजपद्मे सचतुष्के  
वंशंषंसं वर्णविशालैः सुविशालैः ।  
रक्तं वर्णं श्रीभगवतं गणनाथं  
दत्तात्रेयं श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ॥ २ ॥



Ref : [https://sanskritdocuments.org/doc\\_deities\\_misc/dattAShTachakrablja.html](https://sanskritdocuments.org/doc_deities_misc/dattAShTachakrablja.html)